२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

1

भविष्य का बिना डर के सामना कीजिए

2

एक सुन्दर गर्मी के दिन, एक पिता और उसकी नौ साल की पुत्री महासागर में तैर रहे थे। कुछ समय तक वे लहरों पर छपकते रहे। अचानक बहुत तेजी से ज्वार आया और वह जल्दी से उस छोटी लड़की को थोड़ी दूर ले गया। उसका पिता उसके पास नहीं पहुँच सकता था। किनारे तक पहुँचने के लिए उसे मदद की जरूरत थी। भाग्यवश, डर की बजाय पिता ने उससे कहा, "डरो मत पानी के ऊपर आकर आराम से तैरो। मैं तुम्हें लेने आ रहा हूँ।" तब वह जल्दी से एक नाव ढूंढने के लिए गया ।जब वह पिता उस स्थान पर एक नाव और कुछ बचाने वालों के साथ लौटा तब उसका दिल डूबने लगा। उसकी लड़की वहां नहीं थी। वह समुद्र में दूर तक बह चुकी थी। परन्तु अंत में जब वे उसके पास पहुँचे, तब वह लड़की चुपचाप पानी के ऊपर तैर रही थी जैसा कि उसके पिता ने उसे आज्ञा दी थी।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

3

बाद में उससे पूछा गया कि किस प्रकार उसने अपने आपको दूर महासागर में इतना चुपचाप सम्भाले रखा। उसने उत्तर दिया, "मैनें वही किया जो मेरे पिता ने मुझे करने को कहा था। मुझे मालूम था कि वे वापिस आएँगे, और मैं नहीं डर रही थी। उस साहसी छोटी लड़की की आशा ने उसे जिन्दा रखा था; जिसने उसे बचाने और छुड़ाने की सहायता की। यह महान आशा जो हमारे विश्वास को ईसाईयों के रूप में रखती है वह आशा यह है कि हमारा स्वर्गीय पिता इस ग्रह को जो नाश होने वाला है उसे बचाने के लिए तैयार है।

4

(दृश्य)

हाल ही में एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने डरकर कहा कि यह दुनिया एक हजार साल तक ही रहेगी। वह यह कहता है कि इस पृथ्वी के वातावरण में मनुष्य के द्वारा बनाया गया प्रदूषण दुनिया के तापमान को बढ़ाने का कारण होगा।

5

और वह पृथ्वी पर मृत्युकारी गर्म हवाओं को उत्पन्न करेगा। जब ध्रुवी बर्फ की चोटियाँ पिघल जाएंगी तब महाद्वीपों में बाढ़ आ जाएगी। परन्तु दूसरे यह सोचते है कि दुनिया का अन्त दूसरे प्रकार से होगा।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

6

(दृश्य)
कुछ कहते हैं कि हम न्यूक्लियर युद्ध में नाश हो जाएंगे।

7

दूसरे कहते है कि यदि दुनिया की जनसंख्या इसी प्रकार बढ़ती रही तो खाने और दूसरी चीजों की कमी के कारण हमारा अन्त हो जाएगा।

8

और दूसरे यह कहते है कि जैसे ही एक बड़ा पुच्छलतारा या तारा टकराएगा तब हम मिट जाएंगे।

9

और तब वे लोग यह कहते है कि कुछ परदेशी दूसरे ग्रह से उतरेंगे और हम सबको नष्ट कर देंगे। हममें से, सचमुच कितने बहुत- सी दूसरी चीजों के लिए परेशान हैं।

10

हम केवल रहने के किए, या दूसरों के साथ घुल मिल जाने के लिए, या बीमारी, दुःख और मृत्यु के साथ संघर्ष करने की कोशिश कर रहे हैं।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

11

हम में से कितनों के लिए, या फिर बहुतों के लिए, जीवन आसान नहीं है। यह कितना कठिन हो जाता है कि हम बहुधा यह इच्छा करने लगते हैं कि इस संसार का अन्त हो जाए। सचमुच जीवन को दर्द से, भूख और थकान और तनाव से इतना भरा हुआ नहीं बनाया गया था। हम एक अच्छी दुनिया चाहते हैं!

12

तो, मेरे मित्र, आपके लिए अच्छा समाचार है! एक और इससे उत्तम संसार आने वाला है!

13

हम सब यह जानना चाहते हैं कि कब और कैसे इस दुनिया का अंत होगा।
क्या इसका अन्त हमारे जीवित रहते होगा?
भविष्यवाणी करने वाले भविष्यवक्ताओं की कमी नहीं है?

14

और इसके विषय में कौन सही है कि कैसा इसका अन्त होगा?
भविष्यवाणी करने वाले भविष्यवक्ताओं की कमी नहीं है।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

15

परन्तु समस्या यह है कि एकदम सच्ची भविष्यवाणी करने वाले भविष्यवक्ताओं को कहाँ ढूंढे - भविष्यवक्ता जिनकी भविष्यवाणियाँ सही निकलती हैं!

16

(दृश्य)

परन्तु क्या आप जानते है कि कोई है जिसकी भविष्यवाणियाँ सब सच्ची निकली हैं।

कोई है जो हमे बिल्कुल सही रूप में यह बता सकता है कि दुनिया का अंत किस प्रकार होने वाला है - और क्या उसका अंत जल्दी हो जाएगा या यह हजारों वर्षो से भी अधिक रहेगा?

यह जानना कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि जिसने इस संसार को बनाया उसी को यह भी मालूम है कि इसका अन्त कब होगा।

और मित्रों, प्रभु यीशु, सृष्टिकर्ता परमेश्वर, अपने वचन के द्वारा, हमें भविष्य में ले जा सकते हैं। वे एक विश्वासयोग्य मार्गदर्शक हैं।

जिसने इसका आरम्भ किया उसकी अपेक्षा इस दुनिया के अन्त के विषय में और कौन अधिक जान सकता है?

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

17

बाइबिल यीशु मसीह के जीवन में होने वाली दिलचस्प घटना के विषय में बताती है।
एक दिन उसके चेले उसे अलग ले गए, और उन्होंने उसे एक मन्दिर की इमारत दिखाई, जो कि रोमन सरकार के द्वारा पुनः निर्मित की गई थी।

18

रोमन राज्य की समस्त इमारतों में से वह एक मंहगी, सुन्दर और देखने योग्य इमारत थी!
इस इमारत को देखने के पश्चात, यीशु ने अपने चेलों से एक चौंकानेवाला कथन बयान किया। उसने कहा,

19

(मूलपाठ : मत्ती २४ : २)
"....क्या तुम यह सब नहीं देखते? मैं तुम से सच कहता हूँ,

20

यहाँ पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा।"
मत्ती २४ : २

21

यह यहूदी राष्ट्र की श्रेष्ठ इमारत थी, और यीशु ने यह भविष्यवाणी की थी कि यह पूर्णरूप से नष्ट हो जाएगी।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

22

चेले आश्चर्यचकित हो गए थे। और जब वे जैतून पहाड़ पर गये, तब उन्होंने यीशु से वह प्रश्न पूछा जो हम सब ने पूछा होता।

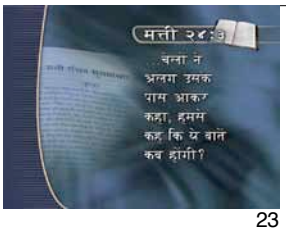

23

(मूलपाठ : मत्ती २४ : ३)

"...चेलों ने अलग उसके पास आकर कहा, हमसे कह कि ये बातें कब होंगी?

24

और तेरे आने का और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा?"

मत्ती २४ : ३

25

आप देखिए, चेलों को यह महसूस हुआ कि यदि यह इमारत नष्ट हो जाएगी, तो इसका संबंध मसीह के आने और दुनिया के अन्त के साथ जरूर है।

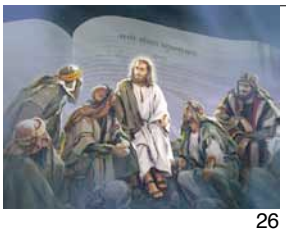

26

परन्तु मती की किताब के २४ वें अध्याय में हमें यह मालूम होता है कि यीशु ने दो अलग-अलग घटनाओं के विषय में कहा था।

27

उनमें से एक यीशु के दूसरे आगमन का था -- उनका इस पृथ्वी पर महिमा के साथ लौटना और इस पृथ्वी पर अनन्त राज्य की स्थापना करना था।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

28

(दृश्य)

और दूसरा, यह था जिसे बहुत से लोग उस समय तक जो जीवित रहेंगे वे उन्हें देखेंगे।

यह यरूशलेम शहर और मन्दिर के विनाश का होगा।

अब यीशु चेलों को आगे यह कहते हैं कि मन्दिर का क्या होने वाला है।

29

(मूलपाठ : मत्ती २४ : १५ - १६)

मत्ती २४ : १५,१६ में उसने कहा, "सो जब तुम उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को जिसकी चर्चा दानिय्येल भविष्यवक्ता के द्वारा हुई थी,

30

पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो' (जो पढ़े वह समझे)।

31

तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं।"

32

दानिय्येल की भविष्यवाणियाँ थीं कि यरूशलेम का नाश हो जाएगा।

परन्तु अब यीशु अपने चेलों को यह याद दिलाते हैं कि दानिय्येल भविष्यवक्ता की चितौनियाँ शीघ्र ही पूर्ण होंगी।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

33

(मूलपाठ : मत्ती २४ : १७ - १८)

मत्ती २४ : १७ - १८ में उसने कहा, "जो कोठे पर हों, वह अपने घर में से सामान लेने को न उतरे।

34

और जो खेत में हों वह अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे।"

35

दूसरे शब्दों में, उसने उनको कहा कि अपनी जान बचाने के किए भाग जाओ, क्योंकि जब उन्होंने यह देखा कि सेनाओं ने यरूशलेम शहर को चारो ओर से घेर लिया है तो उसका विनाश निकट है।

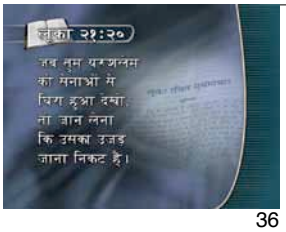

36

(मूलपाठ : लूका २१ : २०)

लूका २१ : २० मे, यीशु ने कहा : "परन्तु जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि उसका उजड़ जाना निकट है।"

तब वह उनसे यह कहने के लिए गया कि जब वे उन सेनाओं को देखें तो वे जहाँ कहीं भी हों, उन्हें भाग जाना चाहिए।

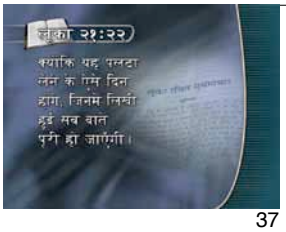

37

(मूलपाठ : लूका २१ : २२ - २४)

"क्योंकि यह पलटा लेने के ऐसे दिन होंगे, जिनमें लिखी हुई सब बातें पूरी हो जाएंगी।"

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

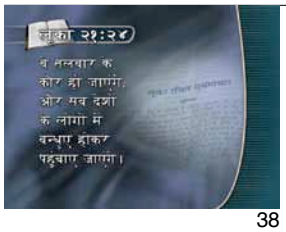

38

"वे तलवार के कौर हो जाएंगे, और सब देशों के लोगों में बन्धुए होकर पहुंचाए जाएंगे।

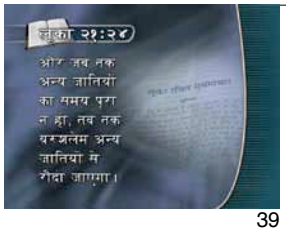

39

और जब तक अन्य जातियों का समय पूरा न हो, तब तक यरूशलेम अन्य जातियों से रौंदा जाएगा।"

लूका २१ : २२, २४

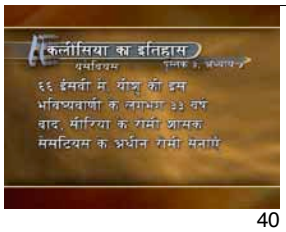

40

"६६ ईसवी में, यीशु की इस भविष्यवाणी के लगभग ३३ वर्ष बाद, सीरिया के रोमी शासक सेसटियस के अधीन रोमी सेनाएँ

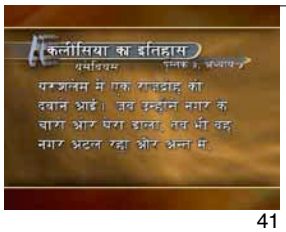

41

यरूशलेम में एक राजद्रोह को दबाने आई। जब उन्होंने नगर के चारों ओर घेरा डाला, तब भी वह नगर अटल रहा और अन्त में,

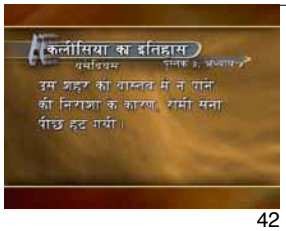

42

उस शहर को वास्तव में न पाने की निराशा के कारण, रोमी सेना पीछे हट गयी।"

(देखिए यूसेबियस, चर्च हिस्ट्री, पुस्तक ३, अध्याय ५)

43

(दृश्य)

जिन लोगों ने यीशु के आदेश का पालन किया वह यरूशलेम नगर के विनाश से बच गए, और जब रोमी सेना ने उस नगर को हथिया लिया तब वे नहीं मरे।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

44

इस भयंकर हमले में लगभग १,१००,००० लोग मारे गये। जब ६६ ईसवी में रोमी सेना पीछे हट गयी तब यीशु के उस शहर से भागने के आदेश का पालन करने में वे लोग असफल रहे। यहाँ भविष्यवाणियों के अध्ययन का महत्व और समय के चिन्हों का ध्यान रखने की शिक्षा मिलती है। जिन लोगों ने मसीह पर विश्वास किया, और उसके पहले से ही बता देने वाले चिन्हों को देखा तो वे बच गए, जबकि अविश्वासी नाश हो गए। इसी प्रकार दुनिया के अन्त में भी यह होगा कि सावधान रहने वाले विश्वासी बचा लिए जाएंगे, जबकि असावधान और अविश्वासी नाश हो जाएंगे।

45

(दृश्य)

ऐश्वर्यशाली मन्दिर का क्या हुआ? तीतुस, रोमी सेनापति जो यरूशलेम शहर का अधिकारी था, जिसने मन्दिर को बचाने की आज्ञा दी परन्तु उसके एक सिपाही ने एक जलती हुई मशाल दरवाजे के अदंर फेंक दी,

46

और वह मंदिर जलकर राख बन गया। एक भी पत्थर दूसरे पत्थर पर न रहा।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

47

यीशु ने यरूशलेम के विनाश की जो भविष्यवाणियाँ अपने चेलों से ४० वर्ष पूर्व की थीं वे वैसी ही पूरी हुई। क्या हम उन चिन्हों को अनदेखा कर देंगे जो यीशु ने हमें दुनिया के अन्त के संबंध में दिया था, या हम उन चितौनियाँ के पूरा होने तक इन्तजार करेंगे और आगे क्या होने वाला है उसके लिए तैयार हो जाएंगे?
हम कैसे और कब जानेगें कि दुनिया का अन्त बहुत निकट है।
यीशु हमें साफ चिन्ह देता है।

48

आइए हम अपने समय के कुछ चिन्हों के बारे में देखते हैं। मत्ती २४ : ७, मसीह ने कहा,

49

(मूलपाठ : मत्ती २४ : ७)
"क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा।

50

और जगह-जगह अकाल पड़ेंगे, और भुईडोल होंगे।"
मत्ती २४ : ७
मनुष्य के इतिहास में २०वीं सदी सबसे खून से भरी सदी थी।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

51

(दृश्य)

प्रथम विश्व युद्ध ने दो करोड़ लोगों को युद्ध की वेदी पर बलिदान होते देखा। द्वितीय विश्व युद्ध ने पाँच करोड़ लोगों का विनाश होते देखा। यधपि सब यह सोचते थे कि अहिंसा और घृणा का अन्त हो जाएगा, परन्तु युद्ध अभी भी होते हैं। ऐसा लगता है कि दुनिया पागल हो गई है। यह समयों के चिन्हों में से एक है।

52

राज्य शांति की बातें तो कहते हैं परन्तु युद्ध की तैयारियाँ करते हैं।

शांति और तैयारी के संबंध में बाइबिल की अन्य भविष्यवाणी यह है:

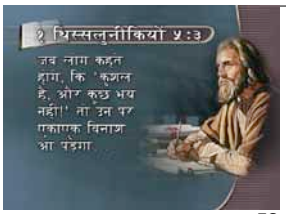

53

(मूलपाठ : १ थिस्सलुनीकियों ५ : ३)

"जब लोग कहते होंगे, कि ' कुशल है, और कुछ भय नहीं! ' तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा..."

१ थिस्सलुनीकियों ५ : ३

हम शांति की बातें कहते हैं, परन्तु शांति नहीं है!

सब ही शांति चाहते हैं!

परन्तु सिर्फ यह बात है!

54

बाईबिल यह कहती है कि पृथ्वी के अन्त के क्षणों में, मनुष्य के पास पृथ्वी को नाश करने की योग्यता होगी।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

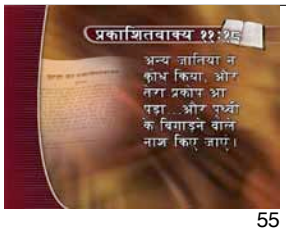

55

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य ११ : १८)

"अन्य जातियों ने क्रोध किया, और तेरा प्रकोप आ पड़ा....और पृथ्वी के बिगाड़ने वाले नाश किए जाएं।"

प्रकाशितवाक्य ११ : १८

पृथ्वी जिन वास्तविक चीजों से बनी है उसको नाश करने की क्षमता मनुष्यों के पास इससे पहले कभी भी नहीं थी।

56

अणुबम के आविष्कार के बाद अब मनुष्य के पास पृथ्वी को नाश करने की योग्यता है।

57

आतंकवादियों ने अब इन अणु हथियारों को, जो अब तक सुरक्षित थे, खरीदने या चुराने का रास्ता ढूंढ़ लिया है। इनमें से कुछ खतरनाक हथियार पहले ही खो गए हैं और उनके हाथ लग गये है जो उन्हें बेचने या प्रयोग करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

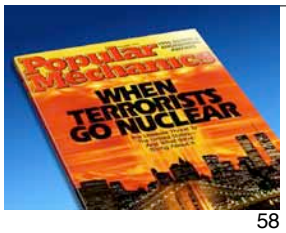

58

एक सम्मानित पत्रिका में यह लिखा था कि एक अणु बम को बनाने की सूचना दुनिया के बहुत से महान पुस्तकालयों में उपलब्ध है।

यह कम्प्यूटर का बटन दबाने जितना आसान है।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

59

(दृश्य)

वे किसके पास हैं और वे जल्द ही इन दिनों में क्या करने वाले हैं?

ये एक सूटकेस से बड़े नहीं हैं। उन्हें कहीं भी लगाया जा सकता है, और उनमें से एक ही दुनिया के एक बड़े शहर को नाश कर सकता है।

60

प्रभु ने यह कहा है कि अन्त के दिनों में हर प्रकार की आपत्तियाँ आएंगी।

61

(मूलपाठ : मत्ती २४ : ७)

".....अकाल पड़ेंगे....."

मत्ती २४ : ७

62

और पृथ्वी के कितने भागों में अकाल पड़ते हैं।

63

यह अनुमान लगाया गया है कि इस एक वर्ष में पाँच करोड़ सत्तर लाख लोग भूखे मरेंगे। जिसका अर्थ है कि, १५६ हजार लोग भूख से हर दिन मरेंगे।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

64

इस पृथ्वी के करोड़ों लोगों में से ६० प्रतिशत कुपोषित है, और २० प्रतिशत भूख से मरेंगे।

यीशु ने कहा कि अकाल भी होंगे और यह एक अन्त का चिन्ह है।

65

(दृश्य)

सूचित स्रोत हमें यह बताते हैं कि जब आबादी भोजन के उत्पादन से अधिक हो जाएगी, तब पूरे विश्व में अकाल, भूखमरी, संक्रामक रोग, और भोजन के युद्ध को कोई नहीं रोक सकेगा। हम किस प्रकार और बढ़ने वाले करोड़ों लोगों का पेट भरेंगें, जबकि संसार की दो तिहाई आबादी अभी भूखी है?

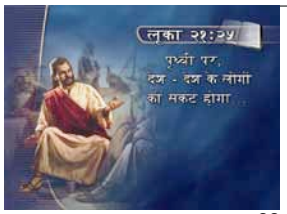

66

(मूलपाठ : लूका २१ : २५)

यीशु पृथ्वी के अन्तिम समय की स्थिति का वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि उस समय क्या होगा "....पृथ्वी पर, देश-देश के लोगों को संकट होगा....."

लूका २१ : २५

67

यीशु ने कहा संक्रामक रोग होगा:

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

68

(मूलपाठ : मत्ती २४ : ७)

"....जगह-जगह अकाल और सक्रांमक रोग, और भुईडोल होंगे।"

शब्दकोष के अनुसार, आधुनिक युग में संक्रामक शब्द का अर्थ, प्लेग के समान या अद्भुत बीमारी है।

69

आधुनिक दवाइयों के पश्चात भी बहुत से प्लेग फैल रहे हैं।

70

एड्स, मलेरिया, निमोनिया, टी॰ बी॰ , इबोला रोग, आतशक, सूजाक, और हैजा।

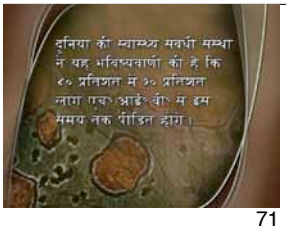

71

दुनिया की स्वास्थ्य संबधी संस्था अब यह अनुमान लगाती है कि हमारे पास चार करोड़ एच॰ आई॰ वी॰ से पीड़ित लोग हैं। यदि इसको रोकने के लिए कुछ न किया गया तो सारे राष्ट्र मिट जाएंगे।

72

समय के चिन्हों में वातावरण प्रदूषण भी एक अन्य चिन्ह पाया जाता है।

बाइबिल ने यह भविष्यवाणी की है कि यह ससांर पुराना हो जाएगा।

यशायाह ५१ : ६ में परमेश्वर ने कहा,

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

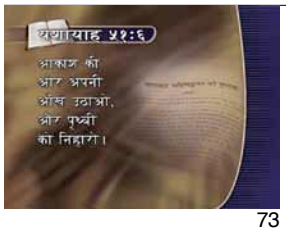

73

(मूलपाठ : यशायाह ५१ : ६)

"आकाश की ओर अपनी आँखें उठाओ, और पृथ्वी को निहारो।

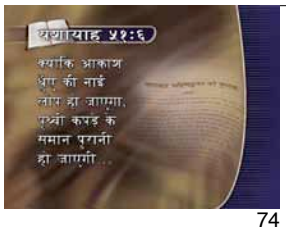

74

क्योंकि आकाश धुँए की नाईं लोप हो जाएगा, पृथ्वी कपड़े के समान पुरानी हो जाएगी।"

इस आकाश और इस पृथ्वी के लिए इससे अधिक अच्छा विवरण क्या हो सकता है जब वे अन्त की ओर लुढ़क रहे हों !

75

हमारे बड़े शहरों के ऊपर जो आकाश है वह जहरीले पदार्थों से भरा हुआ है जिसमें हम अपने फेफड़ों के द्वारा श्वास लेते हैं।

76

बहुत से शहरों में चिपकाए गए विज्ञापन हमें दूषित हवा की हानि के बारे में चेतावनी देते हैं।

77

(दृश्य)

बहुत-सी जगहों पर पानी पीना बिल्कुल सुरक्षित नहीं, क्योंकि उसमें जहरीले पदार्थ पाए जाते हैं।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

78

अणुगंद को समाप्त करना एक भारी समस्या बन गई है।

एक बड़े अणु-चालित कारखाने के क्षेत्र में जहर से पीड़ित कर्मचारियों को क्षतिपूर्ति राशि दी जा रही है।

79

हमें ऊर्जा, स्वच्छ जल और हवा कहाँ से मिलेगी? हमें भोजन कहाँ मिलेगा?

80

(दृश्य)

संसार की तेजी से बढ़ती हुई आबादी के कारण, मनुष्य को इस पृथ्वी पर जीने के लिए भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है !

81

(मूलपाठ : लूका २१ : २५)

"....पृथ्वी पर, देश-देश के लोगों को संकट होगा..."

लूका २१ : २५

82

बाइबिल भूकम्प की बढ़ती हुई संख्या के विषय में भी कहती है।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

83

(मूलपाठ : मत्ती २४ : ७)

"और जगह-जगह...भुईडोल होंगे।"

मत्ती २४ : ७

बहुत तीव्र गति से भुईडोल की बढ़ती हुई संख्या को हमने देखा है।

84

इस पृथ्वी पर हर साल ६,००० बड़े भुईडोल आते हैं।

85

(दृश्य)

पिछले केवल १० वर्षों में इन भंयकर दुर्घटनाओं में पन्द्रह लाख लोगों की मृत्यु हो गयी।

86

पिछले थोड़े समय में, हमने देखा कि भुईडोल ने एक बड़े गर्जन के साथ २०,००० से ३०,००० जानें ले लीं। आप में से कितनों को बहुत-से देशों में हाल ही में हुए भुईडोल याद आएंगे।

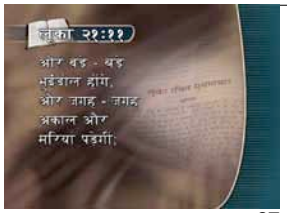

87

(मूलपाठ : लूका २१ : ११,२५)

बाइबिल कहती है, "और बड़े-बड़े भुईडोल होंगे, और जगह-जगह अकाल और मरियां पड़ेंगी;

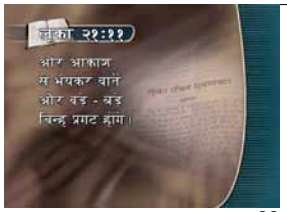

88

और आकाश से भंयकर बातें और बड़े-बड़े चिन्ह प्रगट होंगे.....

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

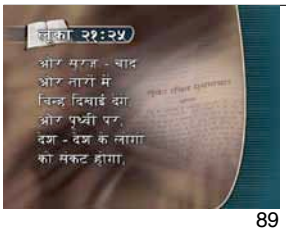

89

और सूरज और चांद और तारों में चिन्ह दिखाई देंगे;

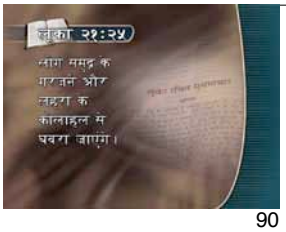

90

और पृथ्वी पर, देश-देश के लोगों को संकट होगा, क्योंकि समुद्र के गरजने और लहरों के कोलाहल से घबरा जाएंगे।"

लूका २१ : ११, २५

91

(दृश्य)

ध्यान दीजिए कि यहाँ लिखा है कि हवा गरजेगी और लहरों में कोलाहल होगा।

पूरे संसार में हमने असामान्य मौसम को देखा है। बंवडर, जो ज्वारभाटे की लहरों में उठते हैं; आंधियाँ; भयंकर तूफान; ज्वालामुखी -- ये सब विपतियाँ सम्पति और जीवन का एक भयंकर रूप से अन्त कर रही हैं।

92

बाईबिल हमें एक और चिन्ह देती है। अन्त के समय की नैतिक स्थितियाँ। यीशु पृथ्वी पर अन्त के दिनों की स्थितियाँ का तुलना सदोम और अमोरा, जो सबसे अधिक पाप से भरे दो शहर थे, के साथ करते हैं। परमेश्वर ने अन्त में स्वर्ग से आग बरसाकर उन दोनों शहरों का नाश कर दिया।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

93

(मूलपाठ : लूका १७ : २८, ३०)

"और जैसा लूत के दिनों में हुआ था;

94

.....मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन भी ऐसा ही होगा।"

लूका १७ : २८ - ३०

95

(मूलपाठ : यहूदा की पत्री १ : ७)

यहूदा ने लिखा कि, ".....सदोम और अमोरा और उनके आस - पास के नगर, जो इनकी नाई व्यभिचारी हो गए थे और पराए शरीर के पीछे लग गए थे।"

यहूदा की पत्री १ : ७

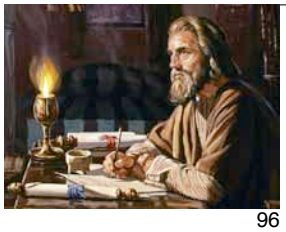
96

पौलुस नैतिक स्थितियों को बताता है जो कि इन शहरों के चरित्र की विशेषता को दर्शाता है। उसने कहा,

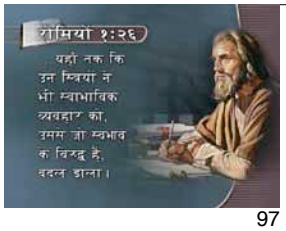

97

".....यहाँ तक कि उन स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को, उससे जो स्वभाव के विरुद्ध हैं, बदल डाला।"

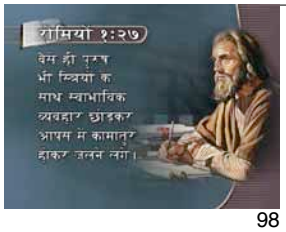

98

वैसे ही पुरुष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

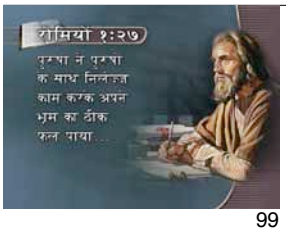

99

पुरूषों ने पुरूषों के साथ निर्लज्ज काम करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया...."

रोमियों १ : २६, २७

100

(मूलपाठ : २ तीमुथियुस ३ : २-५)

"क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी, लोभी, डीगंमार, अभिमानी, निन्दक, माता - पिता की आज्ञा टालनेवाला, कृतघ्न, अपवित्र,

101

मायारहित, क्षमारहित, दोष लगाने वाले, असंयमी, कठोर, भले के बैरी,

102

विश्वासघाती, ढीठ, घमण्ड़ी, और परमेश्वर के नहीं वरन सुखविलास ही के चाहने वाले होंगे-

103

वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे।"

२ तीमुथियुस ३ : २ -५

104

(मूलपाठ : २ तीमुथियुस ३ : १३)

क्या यह स्थिति और बिगड़ सकती है? जी हाँ। लिखा है: "...दुष्ट और बहकानेवाले धोखा देते हुए, और धोखा खाते हुए, बिगड़ते चले जाएंगे।"

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

105

एक सबसे अधिक महत्वपूर्ण चिन्ह जो यीशु ने दिया वह झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता के आने का था। मसीह ने इन झूठे मसीहों और झूठे भविष्यवक्ताओं से हमें सावधान किया जो इस संसार को धोखा देने के लिए आएंगे।

106

(मूलपाठ : मत्ती २४ : २३ - २४)

"यदि कोई तुम से कहे, कि देखो, मसीह यहाँ है! या वहाँ है! तो प्रतीति न करना!"

107

क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे और बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएंगे

108

यदि हो सके, तो चुने हुओं को भी भरमा दें।" मत्ती २४:२३-२४

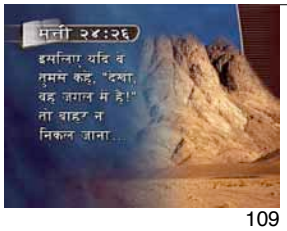

109

(मूलपाठ : मत्ती २४ : २६)

"इसलिए यदि वे तुमसे कहें, "देखो, वह जंगल में है! " तो बाहर न निकल जाना..."

मत्ती २४ : २६

कहीं भी जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि यीशु ने कहा,

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

110

(मूलपाठ : मत्ती २४ : २७)

"क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती जाती है,

111

वैसा ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा।"

पद २७।

112

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १ : ७)

फिर से, हमने कहा था, "देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है, और हर एक आँख उसे देखेगी, वरन जिन्होंने उसे बेधा था....."

प्रकाशितवाक्य १ : ७

113

जब वह आएंगे तब हम उसे देखेंगे !

किसी को हमें यह बताने की आवश्यकता नहीं होगी कि यीशु कब अपने पवित्र स्वर्गदूतों के साथ आएंगे!

114

सबसे अन्तिम और सबसे बड़ा चिन्ह जो यीशु ने दिया था वह यह था कि समस्त संसार को सुसमाचार देना सब चिन्ह में केवल वही चिन्ह अभी पूरा नहीं हुआ है।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

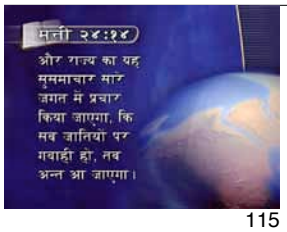

115

(मूलपाठ : मत्ती २४ : १४)

मत्ती २४ : १४

यीशु ने कहा, "और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएंगे।"

116

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, हम यह पाते हैं कि परमेश्वर ने इस महान भविष्यवाणी को पहले से ही बता दिया।

117

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १४ : ६)

"तब मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा,

118

जिसके पास पृथ्वी पर के रहने वालों को सुनाने के लिए सनातन सुसमाचार था।

119

हर एक जाति, और कुल, और भाषा और लोगों को।"

प्रकाशितवाक्य १४ : ६

क्या आप को ऐसा नहीं लगता कि आप इस भविष्यवाणी को आज रात इस सभा में पूरा होते देख रहे हैं? यह प्रत्येक प्राणी को प्रचार करने वाला अनन्त सुसमाचार का एक भाग है।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

120

यह सुसमाचार पूरी पृथ्वी पर टी॰ वी॰ , रेडियो, सुसमाचार प्रचार की सभाएँ, इन्टरनेट, व्यक्तिगत रूप से दिया गया बाइबिल अध्ययन, और पत्र व्यवहार द्वारा दिए गए पाठयक्रम के द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है।

121

दानिय्येल ने यह कहा है कि, "ज्ञान बढ़ जाएगा।" पृथ्वी के इतिहास के इन कठिन अंतिम दिनों में, दानिय्येल की पुस्तक से मुहर हटाई गई है, और इससे वैज्ञानिक संसार के साथ-साथ पृथ्वी के लिए परमेश्वर की योजना के विषय में ज्ञान बढ़ जाएगा।

122

समय निकला जा रहा है!
नूह के समय में पाप के कारण दुनिया का नाश हुआ था और वह पाप अब भी जीवित है।

123

होने वाली बातें इस बात का सबूत हैं, कि मनुष्य अपने नाश के लिए स्वयं जिम्मेदार है। यीशु ने हमारे दिन की तुलना नूह के दिनों से की है।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

124

नूह के समय में जो लोग रहते थे वे अपने जीवन को चलाने में और अपनी दिनचर्या के कार्यों में व्यस्त थे और उनके पास धार्मिक बातों के लिए अधिक समय नहीं था।

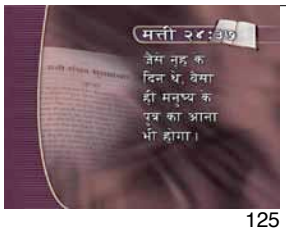

125

(मूलपाठ : मत्ती २४ : ३७ - ३९)

मत्ती २४ : ३७ - ३९ में यीशु ने कहा : "जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।

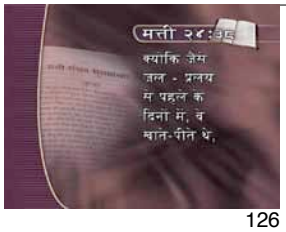

126

क्योंकि जैसे जल -प्रलय से पहले के दिनों में, वे खाते-पीते थे,

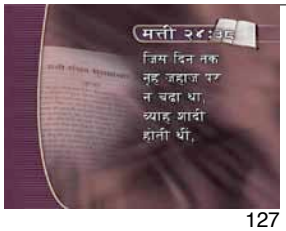

127

जिस दिन तक नूह जहाज पर न चढ़ा था, ब्याह शादी होती थीं,

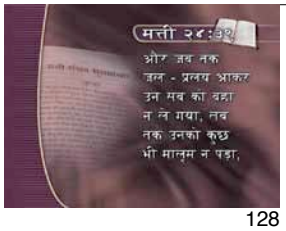

128

और जब तक जल-प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा,

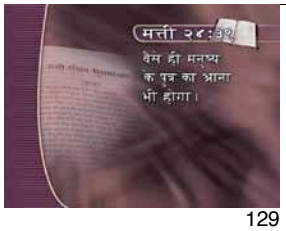

129

वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।"

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

130

यीशु ने कहा है कि उसके दूसरे आगमन में भी वही होगा जो नूह के समय में हुआ था।
लोग मौज-मस्ती कर रहे होंगे, लेकिन उनके पास परमेश्वर के लिए समय नहीं होगा।
वे परमेश्वर से ज्यादा सांसारिक सुखों से प्यार करेंगे।

131

समय बीतता जा रहा है।
जल्दी ही परमेश्वर का पुत्र बादलों पर सवार होकर अनगिनत स्वर्गदूतों के साथ आने वाला है।
परमेश्वर उस दिन का बेसब्री से इन्तजार कर रहा है, इसलिए नहीं कि वह दुनिया को नाश करेगा, परन्तु इसलिए कि वह अपने लोगों को अपने घर ले जा सके।
वह घर इन्तजार कर रहा है। वह तैयार है।

132

जब हम इस दुनिया में आज होने वाले चिन्हों को देखते हैं, तो हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि यीशु का आगमन कितना निकट है।
आज भी चीजें उसी प्रकार हैं जैसे कि उस समय थी जब यीशु पहली बार इस पृथ्वी पर आया था।
उस समय भी लोगों को यह बताने के लिए कि किस समय यीशु इस पृथ्वी पर आएगा, उसने बहुत से चिन्ह दिखाए।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

133

(दृश्य)

घड़ी ४,००० वर्षों के लिए चली, और परमेश्वर ने स्वर्गदूतों और ज्योतिषियों को उसके आने के विषय में बताने के लिए भेजा था।

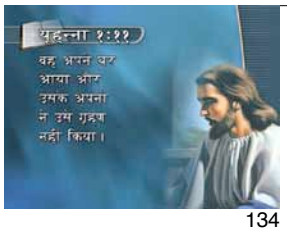

134

(मूलपाठ : यूहन्ना १ : ११)

परन्तु दुःख का विषय है कि "वह अपने घर आया, और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। वे उसके लिए तैयार नहीं थे।

135

दोस्तो, उसने हमें ये सारे चिन्ह दिए हैं जो हमें यह बताते हैं कि वह जल्दी आनेवाला है। यीशु ने कहा,

136

(मूलपाठ : मत्ती २४ : ३३ - ३४)

"इसी रीति से जब तुम इन सब बातों को देखो, तो जान लो, कि वह निकट है, वरन द्वार ही पर है।

137

मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी।"

मत्ती २४ : ३३, ३४

138

क्या हम उनके लिए इस बार तैयार होंगे -- या फिर से उन्हें एक बार निराश करेंगे? समय हो चला है और खतरा भी बहुत है। हम एक क्षण भी नहीं गवां सकते।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

139

न्यूयार्क के बन्दरगाह से सेन्ट्रल -अमेरिका नामक जहाज अटलांटिक में दक्षिण दिशा में पनामा कनाल की ओर जा रहा था तब अचानक उसमें छेद हो गया और पानी भरने लगा। दूसरे जहाज ने उसकी विपत्ति के संकेत को देखा और तुंरत मदद के लिए आ पहुँचा। बचाने वाले जहाज के कप्तान ने यह सदेंश भेजा कि, "क्या बात हो गई है?" तो वहाँ से जवाब आया: "हम अपने जहाज की मरम्मत कर रहे हैं और हमारा जहाज डूब रहा है। सुबह तक की प्रतीक्षा करते हैं। बचाने वाले ने उस वाष्प जहाज को डूबता देखकर यह जवाब दिया, "कि अपने जहाज के यात्रियों को मेरे जहाज में आने दो।" परन्तु बहुत रात हो चुकी थी, और सेन्ट्रल -अमेरिका के कप्तान को यात्रियों को दूसरे जहाज पर ले जाने में खतरा महसूस हो रहा था। उसने जवाब दिया, "सुबह तक प्रतीक्षा करते हैं।" दूसरे कप्तान ने एक और संदेश भेजा और उन्हें जोर दिया कि यह काम अभी हो जाना चाहिए परन्तु उसने इन्कार कर दिया। उसे उस रात के बीत जाने की प्रतीक्षा थी। उसके कर्मचारियों को सेन्ट्रल -अमेरिका की बबियाँ लहरों में बुझती हुई नजर आ रहीं थी। और उन्होंने लगभग ड़ेढ़ घण्टे बाद, उन बायिों को बिल्कुल बुझते हुए देखा। वह जहाज डूब चुका था, और उस पर सवार

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

सभी लोग भी डूब गए थे।

140

प्रतीक्षा करने का अर्थ है हमेशा के लिए खो जाना। कितनी बार आपको तुरंत निर्णय लेना पड़ता है। सेन्ट्रल -अमेरिका जहाज का कप्तान यह सोचता था कि सुबह तक प्रतीक्षा करने में कोई हानि नहीं। वह गलत सोचता था । बाइबिल यह कहती है, "मुक्ति पाने का दिन आज है। "प्रतीक्षा मत कीजिए। हिचकिचाइए मत। देर मत करिए। आप मसीह के लिए अपना फैसला अभी क्यों नहीं करते? क्या आप अभी अपने दिलों को खोलकर परमेश्वर से मसीह के आगमन के लिए अपने आपको तैयार करने की मदद नहीं मांगेगे? क्या आपके जीवन में ऐसी कोई चीज है जो आप को मसीह के आगमन के किए तैयार रहने को रोकती है? क्यों न आज आप इसी समय जब हम प्रार्थना करेंगे तब उस चीज को त्याग दे? यदि आप मसीह को सच्चे मन से ग्रहण करते हैं, " हाँ, प्रभु, जब आप दुबारा आएंगे तो मैं आपसे मिलने के लिए तैयार होना चाहता हूँ।